International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 6, Issue 01, January 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

खाप पंचायत एवं गणतंत्र शासन प्रणाली

यजुवेन्द्र गिरी
शोधार्थी, इतिहास विभाग
शम्भु दयाल (पी०जी०) कॉलेज, गाजियाबाद

सारांश

खाप पंचायतों का प्रचलन कब व कैसे हुआ? इस प्रश्न का सटीक उत्तर देना सरल नहीं है, परन्तु खाप पंचायतों की संरचना एवं कार्य प्रणाली और जो संदर्भ मिलते हैं उनका अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि उनकी संरचना एवं कार्य प्रणाली गणतंत्रीय प्रणाली पर आधारित थी। खाप पंचायतों का यह गणतंत्रीय स्वरूप 1857 के विद्रोह तक बना रहा। जब तक कि अंग्रेजों ने खापों का दमन नहीं कर दिया। खाप की गणतंत्रीय प्रणाली का अध्ययन करते समय यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि खापों के शासन की गणतंत्रीय प्रणाली को हम आधुनिक गणतंत्रीय प्रणाली की तरह नहीं मान सकते। आधुनिक समय में गणतंत्रीय प्रणाली लोकतंत्र का प्रतीक मानी जाती है, जिसमें शासन में सभी लोगों की भागीदारी होती है। खापों में प्रचलित गणतंत्र को हम इन अर्थों में गणतंत्र नहीं कह सकते। हम उन्हें आधुनिक शब्दावली में कुलीन तंत्र या अभिजात तंत्र (Aristocracy) कह सकते हैं, जिसमें शासन का संचालन गोत्र विशेष के व्यक्तियों द्वारा होता है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

शोध–पत्र

खाप पंचायतों का प्रचलन कब व कैसे हुआ? इसका सटीक उत्तर देना कठिन है। खाप पंचायतों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि इसकी संरचना गणतंत्रात्मक व्यवस्था पर आधारित थी। ऐसे में स्पष्ट है कि खाप पंचायतों का प्रचलन भी गणतंत्रीय व्यवस्था के प्रचलन के साथ हुआ होगा। भारतीय सर्वखाप के मंत्री रहे चौधरी कबूल सिंह के अनुसार, *"खाप का अर्थ है संघ अथवा संगठन। पंचायत में पंच का अर्थ है, न्याय करने वाला तथा आयत का अर्थ स्थान है। इस प्रकार खाप पंचायत का अर्थ है न्याय करने वाली पंचायत का संगठन।*[1] इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रशासन या न्याय करने का जो तरीका पाँच के समूह या परिषद पर आधारित था, खाप पंचायत कहा गया।

गणतंत्र में गण से तात्पर्य है समूह तथा तंत्र से तात्पर्य है शासन। इस प्रकार गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें शासन करने का कार्य समूह द्वारा किया जाता है।[2] इस प्रकार स्पष्ट है कि गण तथा खाप समान अर्थ समूह को इंगित करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गणतंत्र तथा खाप पंचायत समान भावार्थ रखते हैं।

ऐसा माना जा सकता है कि जब भारतीय सामाजिक संरचना एक सभ्यता के रूप में घुमंतू से स्थायी कृषि प्रथाओं की ओर मुड़ने लगी तो वह एक ग्रामीण ईकाई के रूप में भी संगठित होने लगी। ऐसी स्थिति में भारतीय समाज शताब्दियों तक विभिन्न रूपों में संगठित होता रहा, यथा– आदिवासी, पशुचारी, गणतंत्र, राजतंत्र। इस प्रकार अति प्राचीन काल से, जिसकी जानकारी उपलब्ध है, समाज का गणतत्रीय या खाप पंचायती रूप मिलता है। प्रशासन का वह तरीका जो पाँच की परिषद पर आधारित था, पंचायत कहा गया। वैदिक काल की प्रमुख संस्थाओं यथा– सभा, समिति, विदथ आदि का गठन भी पंचायती आधार पर हुआ था। इनकी पंचायतों में सभी को भाग लेने का अधिकार था।[3]

सर्वप्रथम 1903 में रिज डेविस ने साम्राज्यवादी दृष्टिकोण को चुनौती देने के लिये प्राचीन भारत में गणराज्यों की खोज की।[4]

बौद्ध एवं जैन ग्रंथों से पता चलता है कि छठी शताब्दी ईसा पूर्व में गंगा घाटी में अनेक गणराज्य अस्तित्व में थे, जिसमें शाक्य, कोलिय, भग्ग, बुलि, कलाम, मल्ल आदि प्रमुख थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गणराज्यों का उल्लेख मिलता है। वार्ताशस्त्रोपजीवी तथा राजशब्दोपजीवी। प्रथम के अन्तर्गत कम्बोज, सुराष्ट्र तथा दूसरे के अन्तर्गत लिच्छवि, वृज्जि, मल्ल, मद्र तथा पच्चाल की गणना की गयी है। हमचन्द्र राय चौधरी ने सिकन्दर के आक्रमण के समय उत्तर–पश्चिमी भारत में 28 स्वतंत्र

[1] सिंह, कबूल, इतिहास सर्वखाप पंचायत, पहला भाग, अजय प्रिंटिंग प्रेस, मुजफ्फरनगर, 1976, पृ० 2
[2] www.hi.quora.com
[3] श्रीवास्तव, के०सी०, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2002, पृ० 67
[4] डेविड्स, रिज, बुद्धिस्ट इण्डिया, पृ० 13–14

शक्तियों का उल्लेख किया है।[5] जिनमें क्षुद्धक, मालब, यौयेद्ध, अर्जनायन आदि कई गणराज्य थे। इन गणराज्यों ने सिकन्दर को कड़ी चुनौती दी थी। कुछ विद्वानों का मानना है कि यौयेद्ध का सम्बन्ध वर्तमान दहिया गोत्र से तथा अर्जनायन का सम्बन्ध वर्तमान में जाटों के जून गोत्र से है। इन गणराज्यों का अस्तित्व 600 ई०पू० से 400 ई० तक बना रहा। जब तक कि समुद्रगुप्त ने अपनी साम्राज्यवादी नीति के अन्तर्गत इन गणराज्यों का विनाश नहीं कर दिया। हालांकि समुद्रगुप्त की साम्राज्यवादी नीति इन गणराज्यों के लिये घातक सिद्ध हुई[6], परन्तु फिर भी ये गणराज्य अपना अस्तित्व बचाने में सफल रहे। गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात जो राजनीतिक अव्यवस्था उत्पन्न हुई, उसमें ये गणराज्य फिर से अपना प्रभाव बनाने में सफल रहे और हर्षवर्धन के समय अनेक खापों के रूप में सामने आये।

सम्राट हर्षवर्धन ने इन गणराज्यों को खाप के रूप में संगठित किया तथा इन खापों का सहयोग व समर्थन प्राप्त करके उत्तर–भारत का सार्वभौम शासक बन गया। हर्षवर्धन के राज्यभिषेक के समय 21 खाप प्रमुखों ने उसे शासन का भार सौंपा था व पूर्ण सैनिक सहयोग का आश्वासन दिया था।[7] सम्राट हर्षवर्धन ने ही सबसे पहले इन खापों को संगठिन करने के लिये 642 में कन्नौज में विशाल सम्मेलन आयोजित किया था, जिसमें करीब 300 खाप पंचायतों प्रतिनिधि शामिल हुये थे।[8] इस प्रकार सबसे पहले सम्राट हर्षवर्धन ने सर्वखाप पंचायत सम्मेलन आयोजित किया था।[9] क्योंकि सम्राट हर्षवर्धन ऐसे सर्वखाप सम्मेलन प्रत्येक पाँच वर्ष के बाद आयोजित करते थे। अतः इस क्रम में प्रत्येक पाँच वर्ष पश्चात सर्वखाप सम्मेलन बुलाने की परम्परा बन गयी थी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि हर्ष के समय तक आते–आत इन गणराज्यों को खाप कहा जाने लगा। महत्वपूर्ण यह है कि इन खापों की कार्य प्रणाली, राजनीतिक तथा सामाजिक व्यवस्था अभी भी अपने पूर्ववर्ती गणराज्यों के समान थी।

प्राचीन गणराज्यों का अध्ययन करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि प्राचीन भारत के गणतंत्र आधुनिक काल के गणतंत्रों से भिन्न थे। आधुनिक काल में गणतंत्र प्रजातंत्र का समानार्थी है, जिसमें शासन की अन्तिम शक्ति जनता के हाथों में निहित रहती है। प्राचीन भारत के गणतंत्र इस अर्थ में गणतंत्र नहीं कहे जा सकते। उन्हें हम आधुनिक शब्दावली में कुलीनतंत्र या अभिजात तंत्र (Aristocracy) कह सकते हैं, जिसमें शासन का संचालन सम्पूर्ण प्रजा द्वारा न होकर किसी कुल विशेष के प्रमुख व्यक्तियों द्वारा किया जाता था। उदाहरण के लिये, यदि हम वैशाली के लिच्छवी गणराज्य का नाम लेते हैं तो हमें यह कदापि नहीं समझना चाहिये कि वहां के शासन में वैशाली नगर की सम्पूर्ण जनता भाग लेती थी। बल्कि तथ्य यह है कि केवल लिच्छवि कुल के प्रमुख व्यक्ति ही शासन चलाते

[5] श्रीवास्तव, के०सी०, वही, पृ० 132
[6] श्रीवास्तव, के०सी०, वही, पृ० 414
[7] आर्य, बिहाल सिंह, सर्वखाप पंचायत का राष्ट्रीय पराक्रम, सैनी प्रिंटर्स, 1991, पृ० 37
[8] www.jatland.com
[9] आर्य, निहाल सिंह, वही, पृ० 38

थे।[10] अपनी राजनीतिक व्यवस्था के संचालन में इसी कुलीन तंत्रीय प्रणाली का प्रयोग खाप पंचायतें भी करती हैं। खाप सामान्यतः 84 गाँवों की ईकाई होती है, लेकिन 12, 24 तथा 52 गाँवों की भी खापे हैं।[11] खाप का क्षेत्र अधिकांश कृषि भूमि पर अधिपत्य रखने वाली किसी गोत्रीय जाति के लोगों से आबाद हो सकता है। कुछ ऐसी भी खापे हैं जहां किसी जाति के एक से अधिक गोत्रों का निवास होता है, जब कभी ऐसा होता था, तो खाप की चौधर सर्वाधिक संख्या वाले गोत्र को प्रदान की जाती थी। इस प्रकार खाप की कार्यात्मक तथा संरचनात्मक ईकाई गोत्र है। खाप की शक्ति का आधार यह गोत्रीय भाई–चारा है। खाप का यह गोत्रीय भाई–चारा एक गोत्र, जाति तथा गाँव तक सीमित नहीं था। बल्कि उस खाप के सभी गाँव तथा सभी लोग उसके अर्न्तगत आते हैं। इसलिये उस खाप के लोग एक वंश का हिस्सा हो जाते हैं।[12] परन्तु खाप की चौधराहट प्राचीन गणतंत्रों के समान किसी गोत्र विशेष के लोगों के हाथ में होती थी तथा शेष जनता के रेया–रियाया माना जाता था। इस प्रकार स्पष्ट है कि खापों की शासन प्रणाली भी कुलीन तंत्रीय थी।

खाप पंचायतें अपने इस कुलीन तंत्रीय प्रशासनिक स्वरूप को 1857 की क्रांति तक बनाये रख सकी, जिसका मुख्य कारण यह था कि तुर्क, अफगान, मुगल आदि जो मध्यकालीन शासक वंश थे, वे शहरी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते थे। इसलिये उनकी गतिविधियों का केन्द्र केवल शहरी क्षेत्र थे। ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन में उन्होंने हस्तक्षेप का कोई प्रयास नहीं किया। मध्यकाल में सत्ता परिवर्तन का ज्यों प्रभाव पड़ा वह केवल शहरी अभिजात तथा कुलीन वर्ग तक सीमित था। ग्रामीण अभिजात तथा कुलीन वर्ग ज्यों का त्यों बने रहे। यह कारण है कि इन खाप पंचायतों की उपस्थिति केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक है, शहरी जीवन पर इनका कोई प्रभाव नहीं है।

भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ही खाप पंचायतों के प्रभाव में भी कमी आनी प्रारम्भ हो गयी थी। क्योंकि, अपनी वाणिज्यिक नीति के अन्तर्गत ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में हस्तक्षेप करके परम्परागत ग्रामीण व्यवस्था को छिन्न–भिन्न कर दिया। उन्होंने गाँवों के आत्मनिर्भर तथा ग्रामीण ढांचे को नष्ट कर दिया। उन्होंने पंचायतों के निर्णय करने के अधिकार को समाप्त करके ग्रामीण न्यायालय स्थापित कर दिये। अंग्रेजों के इन कार्यों से खाप पंचायतों के प्रभाव में कमी आयी। इसी से नाराज होकर ही खाप पंचायतों के नेताओं ने 1857 की क्रांति में प्रमुखता से भाग लिया था। साथ ही उन्होंने मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर को समर्थन का एलान भी किया था।[13] यही कारण है कि 1857 की क्रांति का दमन करने के पश्चात अंग्रेजों ने खाप पंचायतों को भी निर्ममता से कुचल डाला। खाप पंचायतों के चौधरियों यथा– बालियान खाप के थान सिंह[14] तथा सलकलायान खाप के

[10] श्रीवास्तव, के०सी०, वही, पृ० 104
[11] प्रधान, डॉ० एम०सी०, उत्तर–भारत में जाटों की शासन व्यवस्था, अनुवादक जयचन्द शास्त्री, अखिल भारतीय जाट महासभा, नई दिल्ली, 1990, पृ० 43
[12] प्रधान, एस०सी०, वही, पृ० 26
[13] आर्य, निहाल सिंह, वही, पृ० 315
[14] बालियान, विरेन्द्र, भारतीय क्षत्रिय जाट इतिहास, शारदा पब्लिकेशन, मेरठ, 2004, पृ० 392

श्यामसिंह[15] की उनके समर्थकों सहित, हत्याऐं कर दी गयीं। खापों के प्रभाव वाले गाँव के गाँव जला डाले गये। अंग्रेजों ने क्रांति में भाग लेने के कारण खाप पंचायतों का इस प्रकार दमन कर डाला कि 1857 से 1950 तक सर्वखाप पंचायत की कोई बैठक आयोजित नहीं हुई। इस दौरान ये खाप पंचायतें अपने–अपने क्षेत्रों में छोटे–मोटे सामाजिक कार्यों तक सीमित रही। हालांकि 1950 ई० की सोरम महापंचायत के बाद से इन खाप पंचायतों ने अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करने का असफल प्रयास किया है, परन्तु इस दौरान वे अपने नकारात्मक फैसलों के कारण ही अधिक चर्चा में रही हैं।

[15] शर्मा, के०के०, 1857 की क्रांति में बागपत जनपद के कृषकों की भूमिका, शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत, 2015, पृ० 141

सन्दर्भ

- *श्रीवास्तव के०सी०, "प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति", यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2002*
- *सिंह कबूल, "इतिहास सर्वखाप पंचायत", पहला भाग, अजय प्रिंटिंग प्रेस, मुजफ्फरनगर, 1976*
- *बालियान विरेन्द्र, "भारतीय क्षत्रिय जाट इतिहास", शारदा पब्लिकेशन, मेरठ, 2004*
- *आर्य निहाल सिंह, "सर्वखाप पंचायत का राष्ट्रीय पराक्रम", सैनी प्रिन्टर्स, दिल्ली, 1991*
- *प्रधान एम०सी०, "उत्तर–भारत में जाटों की शासन व्यवस्था" (अनुवादक जयचन्द शास्त्री), प्रकाशक अखिल भारतीय जाट महासभा, नई दिल्ली, 1990*
- *चौधरी डी०आर०, "खाप पंचायतों की प्रासंगिकता" (अनुवादक मुकेश कुमार), नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, 2012*
- *वर्मा हरिशचन्द्र, "मध्य कालीन भारत", हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2014*
- *थापर रोमिला, "ए हिस्ट्री ऑफ इण्डिया", भाग–एक, पेंगुइन बुक्स, 1984*
- *चन्द्र सतीश, "मध्यकालीन भारत", हर आनन्द पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1973*
- *ग्रोवर बी०एल०, "आधुनिक भारत का इतिहास", एस० चन्द, नई दिल्ली, 2006*
- *ताराचन्द, "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास", सूचना प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, 1996*
- *चन्द विपिन, "भारत का स्वाधीनता संघर्ष", हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली, 1990*
- *एन.सी.ई.आर.टी., आधुनिक भारत, 2004*
- *मजूमदार आर०सी०, "चौधरी हेमचन्द्र राय", मद्रास, 1990*

समाचार–पत्र एवं पत्रिकाऐं

- *खाप रजिस्टर, सिसौली, मुजफ्फरनगर*
- *हिन्दुस्तान, मेरठ*
- *जनवाणी, बागपत*
- *द टाईम्स ऑफ इण्डिया, चण्डीगढ़*
- *दैनिक जागरण, मेरठ*
- *news18.com*
- *अमर उजाला, मेरठ*